सम्पादकीय युगऋषि के शिष्य के अनुरूप बेहतर जीवन के लिए कुछ कदम बढ़ाएँ 2
पीड़ित-पिछड़ों के उत्थान के लिए की गई सेवाएँ 3
शक्तिपीठ भोपाल पर लगा त्रैमासिक पुस्तक मेला लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना 5
आदरणीय डॉक्टर चिन्मय जी का छत्तीसगढ़ प्रवास 6
गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ पुंसवन संस्कार समारोह 6
विवेकानन्द जयन्ती पर पूरे देश में उत्साह वर्धक आयोजन 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 फरवरी 2022

वर्ष : 34, अंक : 15
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जनवरी 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

युग निर्माण सत्संकल्पों को जनजीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए प्रभावशाली प्रयास हों

आंतरिक परिवर्तन के बिना बाह्य सुधारों के प्रयास अधूरे ही रहेंगे

संकल्प की महान महत्ता

संकल्प की शक्ति अपार है। यह विशाल ब्रह्माण्ड परमात्मा के एक छोटे से संकल्प का ही प्रतिफल है। इच्छा जब बुद्धि द्वारा परिष्कृत होकर दृढ़ निश्चय का रूप धारण कर लेती है, तब वह संकल्प कहलाती है। जब भावनापूर्वक मनोबल किसी दिशा में संलग्न हो जाता है तो सफलता के उपकरण अनायास ही जुटते चले जाते हैं। बुरे संकल्पों की पूर्ति के लिए भी जब साधन बन जाते हैं तब सत्संकल्पों के बारे में तो कहना ही क्या है। धर्म और संस्कृति का जो विशाल भवन मानव जाति के सिर पर छत्रछाया की तरह मौजूद है, उसका कारण ऋषियों का सत्संकल्प ही है।

संकल्प इस विश्व की सबसे प्रचंड शक्ति है। विज्ञान की शोध द्वारा अगणित प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करके वशवर्ती बना लेने का श्रेय मानव की संकल्प शक्ति को ही है। शिक्षा, चिकित्सा, शिल्प, उद्योग, साहित्य, कला, संगीत, आदि विविध दिशाओं में जो प्रगति हुई आज दिखाई पड़ती है, उसके मूल में मानव का संकल्प ही सन्निहित है। इसे प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष कह सकते हैं। आकांक्षा को मूर्त रूप देने के लिए जब मनुष्य किसी दिशा विशेष में अग्रसर होने के लिए दृढ़ निश्चय कर लेता है तो उसकी सफलता में सन्देह नहीं रह जाता।

इस स्थिति में कब तक पड़े रहें?

इन दिनों जिस युग में हम रह रहे हैं उसमें ऐसी परिस्थितियाँ दिन-दिन घटती जाती हैं जिनमें रह कर मनुष्य प्रसन्नता और शान्ति प्राप्त करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके। आज तो वही परिस्थितियाँ बढ़ोतरी पर हैं जिनमें रहते हुए दम घुटता है और रोटी-पानी खाता हुआ मनुष्य भूखा-प्यासा रहता अनुभव करता है। शारीरिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात करें तो लगता है कि हमारी बाहरी चमड़ी का लिफाफा मात्र तो सीधा खड़ा है, लेकिन भीतर सब कुछ खोखला हो चुका है। न किसी का पेट ठीक काम करता है, न मस्तिष्क। रस-रक्त से लेकर वीर्य, ओज तक सभी धातुएँ निस्तेज, निष्प्राण पड़ी हैं। रोगों ने रोम-रोम में घेरा डाल रखा है, आये दिन किसी न किसी अंग में कोई न कोई बीमारी खड़ी रहती है। जरा-सी असफलता, प्रतिकूलता, शोक-सन्ताप, क्षोभ-अपमान और आवेश के आघात से पागल हो जाना, स्वास्थ्य खो बैठना, आत्महत्या कर लेना, दूसरों की जान के ग्राहक बन जाना आदि दुर्घटनाएँ कर बैठने जैसी घटनाऐं आये दिन घटित होती रहती हैं। इससे प्रतीत होता है कि गम्भीरता, सहनशीलता और दूरदर्शिता की दिमागी ताकत समाप्त हो चुकी, शरीर ही नहीं, हमारे मस्तिष्क भी खोखले हो चुके हैं।

इन शारीरिक परिस्थितियों में क्या कोई जीवन का लाभ ले सकता है? अस्वस्थ शरीर में रहने वाला अस्वस्थ मन, केवल अस्वस्थ बातें ही सोच सकता है, अस्वस्थ योजनाएँ ही बना सकता है और अस्वस्थ काम ही कर सकता है। ऐसे लोग कोई सीधा शार्टकट ढूँढ़ते रहते हैं, जिससे कम श्रम में अधिक लाभ मिल जाए। ऐसे तरीके केवल चोरी, ठगी, बेईमानी, बदमाशी के ही हो सकते हैं, सो ही उन्हें अपने लिए सरल एवं उपयुक्त दिखाई पड़ते हैं। उन्हें ही वे करते हैं। अनीति और कुकर्मों की गतिविधियाँ अपनाते हैं। फलस्वरूप मानसिक स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है। विकृत मन में अनेकों दुर्गुण, अनेकों व्यसन, अनेकों कुविचार अड्डा जमा कर बैठ जाते हैं और मनुष्य विकृतियों का घर मात्र बन कर रह जाता है। ऐसे विकृत व्यक्तियों से मिल कर बना हुआ समाज क्या कभी स्वस्थ समाज कहा जा सकता है? उसमें अपराध और क्लेश, कलह ही बढ़ते हैं। उत्पादन शक्ति के अभाव में दीनता और दरिद्रता ही घेरे रह सकती है। स्वार्थपरता और अनुदारता के बढ़ जाने से पारस्परिक स्नेह, सद्भावों का समाप्त हो जाना स्वाभाविक है। स्वयं कष्ट उठा कर दूसरों की सुविधा का ध्यान रखने की प्रवृत्ति उनमें कहाँ से पैदा होगी? और इसके अभाव में कोई राष्ट्र या समाज सभ्य, समुन्नत कैसे बन सकेगा?

पिछले दिनों राष्ट्रीय आमदनी में कुछ वृद्धि हुई है तो साथ ही नशेबाजी, शौकीनी, सिनेमाखोरी, मुकदमेबाजी, फौजदारी, बेईमानी, चालाकी, रिश्वत, मिलावट, फिजूलखर्ची, विवाह-शादियों की धूमधाम आदि कितनी ही बातें ऐसी बढ़ गई हैं, जिससे गरीबी पहले से भी और अधिक हो गई है। सही बात यह है कि मनुष्य का घटिया दृष्टिकोण, घटिया स्तर और घटिया लक्ष्य ही सारी विपत्तियों का मूल कारण है। उसमें सुधार करने की ओर यदि ध्यान न दिया गया तो आर्थिक सुधार के लिए, रोग निवारण के लिए, सुख साधन बढ़ाने के लिए सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर लम्बे चौड़े कार्यक्रम बनने पर भी परिस्थितियाँ जहाँ की तहाँ पड़ी रहेंगी।

परिवर्तन का उद्गम स्थल

कानून के द्वारा इन परिस्थितियों के रोके जाने में थोड़ी सहायता भले ही मिलती हो, पर केवल उन्हीं के आधार पर पूरी तरह रोकथाम हो सकना सम्भव नहीं। अपराधों की रोकथाम और सज्जनता की अभिवृद्धि का एक मात्र आधार अन्तरात्मा की प्रेरणा पर ही निर्भर रहता है। दया, करुणा, मैत्री, उदारता जैसे सद्गुणों को भूगोल, इतिहास, गणित की तरह किसी को सिखाया नहीं जा सकता। त्याग और बलिदान की भावनाएँ किसी के कहने-सुनने से नहीं आतीं। उनका उद्भव तो गहन आन्तरिक स्तर से होता है और उनका पनपना तभी सम्भव होता है जब आत्मा निरन्तर इस दिशा में प्रेरणा करती रहे।

मानव अन्तरात्मा की आकांक्षा है शांति और सद्भावनापूर्ण वातावरण की स्थिरता। इसी का नाम स्वर्ग है, इसी को सतयुग कहते हैं। इसकी प्रगति असंभव नहीं, पूर्णतया सरल और संभव है, बशर्ते कि हम अपने दृष्टिकोण में थोड़ा-सा परिवर्तन करने को तैयार हों, जीवन दर्शन के तत्त्वों पर थोड़ा मनन और चिन्तन करके यह खोजें कि किन गतिविधियों को अपनाने से व्यक्ति का, व्यक्तित्व और समाज का प्रवाह सही दिशा में विकसित हो सकता है।

परिस्थितियाँ बदलनी हों तो उनके उद्गम में काम करने वाले विचारों और कार्यों को बदलना, सुधारना आवश्यक होता है। इस व्यक्तिगत परिवर्तन का सामूहिक रूप युग परिवर्तन के रूप में दृष्टिगोचर होता है। मनुष्य बदलता है तो जमाना भी बदलने लगता है। दृष्टिकोण में परिवर्तन आते ही वातावरण बदला हुआ दिखाई पड़ने लगता है। आन्तरिक परिवर्तन की तैयारी में लगा जाय तो बाह्य परिवर्तन स्वयमेव सामने उपस्थित हो जायेगा। एक-एक तिनका मिलकर रस्सी बनती है, एक-एक सींक मिलकर बुहारी कहलाती है, एक-एक बूँद गिरने से घड़ा भर जाता है, एक-एक व्यक्ति का निर्माण होता चले तो युगनिर्माण हुआ दृष्टिगोचर होगा।

मानवीय चेतना की परिशुद्धि

आज प्रत्येक विचारशील व्यक्ति यह अनुभव करता है कि मानवीय चेतना में वह दुर्गुण पर्याप्त मात्रा में बढ़ चले हैं, जिनके कारण अशान्ति और अव्यवस्था छाई रहती है। इस स्थिति में परिवर्तन की आवश्यकता अनिवार्य रूप से प्रतीत होती है पर यह कार्य केवल आकांक्षा मात्र से पूर्ण न हो सकेगा, इसके लिये एक सुनिश्चित दिशा निर्धारित करनी होगी और उसके लिए सक्रिय रूप से संगठित कदम बढ़ाने होंगे। युग निर्माण सत्संकल्प उसी दिशा में एक सुनिश्चित कदम है। उस पर मनन और चिन्तन करें तथा निश्चय करें कि हमें अपना जीवन इसी ढाँचे में ढालना है। दूसरों को कुछ करने के लिए कहने का सबसे प्रभावशाली तरीका एक ही है कि हम वैसा करने लगें। बूँद-बूँद जल के मिलने से ही समुद्र बना है। एक-एक अच्छा मनुष्य मिलकर ही अच्छा समाज बनेगा। व्यक्ति निर्माण का व्यापक स्वरूप ही युग-निर्माण के रूप में परिलक्षित होगा।

(अखण्ड ज्योति, सितंबर 1962, से संकलित, संपादित)

युग निर्माण सत्संकल्प (नवयुग स्थापना के लिए आवश्यक सर्वमान्य सूत्र)

1. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
2. शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्म-संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
3. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
4. इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
5. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
6. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
7. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
8. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
9. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
10. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
11. दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।
12. नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
13. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
14. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
15. सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
16. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
17. मनुष्य अपने भाग्य का निमार्ता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
18. हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष को अविस्मरणीय बनाएँ

युगऋषि के शिष्य के अनुरूप बेहतर जीवन के लिए कुछ नए कदम बढ़ाएँ

पावन बसंत

यह बसंत ऋतु की पावन बेला है। बसंत का अर्थ ही है नवसृजनात्मक आह्लादकारी ऊष्मा और उमंगों का संचार। कड़ाके की ठंड के कहर के बाद गुनगुनी धूप में, कोयल की कूक में, मयूर के नृत्य में, बाग-बगीचों के फूलों में, खेतों में फूली सरसों में यह बसंत सहज दिखाई देता है। जब प्रकृति अपने पूरे शृंगार के साथ मोद मनाती है वह ऋतुराज बसंत ही है।

परम पूज्य गुरुदेव के कथन के अनुसार बसंत ऋतु मानवीय मन एवं अंतःकरण में भी सृजनात्मक उमंगों का संचार करने वाली बड़ी महत्वपूर्ण बेला है। बसंत एक हूक है। जीवन में जब बसंत आता है तो व्यक्ति नरेन्द्र से विवेकानंद बनता जाता है। तब पंच प्यारे अपने समाज और संस्कृति के लिए बलिदान होने को तत्पर हो जाते हैं। भगत सिंह अपने प्राणों की परवाह किए बिना अंग्रेजों के सिंहासन को चुनौती देते नजर आते हैं। यह बसंत नर-पशु जैसे जीवन से ऊपर उठकर कुछ सार्थक और श्रेष्ठ करने की प्रेरणाओं से अंतःकरण को आंदोलित कर देता है।

हम सब जानते हैं कि परम पूज्य गुरुदेव बसंत पंचमी के दिन ही अपना आध्यात्मिक जन्मदिन मनाते रहे हैं। सन् 1926 की बसंत पंचमी ही वह पावन दिन था, जब दादा गुरुदेव स्वामी सर्वेश्वरानंद जी ने उन्हें उनकी महानता एवं जीवन लक्ष्य का बोध कराया और सामान्य मानवीय जीवन से ऊपर उठकर श्रेष्ठता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक 15 वर्षीय बालक (परम पूज्य गुरुदेव) ने अपने मार्गदर्शक के आदेश के पालन में लेशमात्र भी हिचकिचाहट न दिखाते हुए इस सौभाग्य का खुशी-खुशी वरण किया और अपना सारा जीवन मानवता के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। एक व्यक्ति के जीवन में आए बसंत ने मानवता को निहाल कर दिया।

उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने की उमंग के रूप में यह बसंत हर व्यक्ति के जीवन में आता है। जो उसे पहचान लेते हैं वे धन्य हो जाते हैं, शेष तो मानवीय काया के रूप में आत्मिक उत्थान के लिए मिले सुर-दुर्लभ जीवन को सामान्य-सा जीवन जीते हुए ही गँवा देते हैं।

बसंत पंचमी परम पूज्य गुरुदेव का बोध दिवस (आध्यात्मिक जन्म दिवस) है। इस मंगलमय वेला में प्रत्येक वर्ष मानवता के उत्थान के लिए नई-नई स्फुरणाएँ, प्रेरणाएँ और दैवी योजनाएँ उनके जीवन में अवतरित होती रहीं और आज भी वह क्रम निरन्तर चल रहा है। हर बसंत युग निर्माण योजना से जुड़े करोड़ों लोगों को उनके जीवन के सौभाग्य की याद दिलाता है, उनमें उत्कृष्टता की ओर साहसी कदम बढ़ाने की उमंग जगाता है। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में आया यह बसंत पर्व भी अपनी गुरुसत्ता के जीवन-आदर्शों का अनुगमन करते हुए उनकी आकांक्षाओं पर खरे उतरने की दिव्य प्रेरणा लेकर आया है। हर व्यक्ति हनुमान नहीं होता, लेकिन रीछ-वानर और गिद्ध-गिलहरी की भूमिका निभा सकता है। कृष्ण के ग्वाल-बाल भी असुरता के दमन में सहयोग का हाथ बढ़ाकर धन्य हो जाते हैं। कोई गाँधी, गोखले, विवेकानन्द भले ही न हो, लेकिन स्वतंत्रता सेनानी होने का गौरव क्या कम है?

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष

परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण योजना से जुड़े प्राणवान परिजनों को 'अपने अंग-अवयव' कहा है। उन्होंने नैष्ठिक परिजनों से युगान्तरीय चेतना को धारण कर एक अंश का अवतार बनने का और 10 गाँवों की जागीरदारी सँभालने का आह्वान भी किया है। यह कोरी कहावत नहीं है, बल्कि तद्नुरूप उनकी सघन आत्मीयता और जुड़ाव की अनुभूतियाँ सभी को होती रही हैं। इस नाते उनके जीवन में आने वाली प्रेरणाओं और स्पंदनों का प्रभाव हम सब तक भी पहुँचता रहा है, बशर्ते हम उन्हें अनुभव कर सकें और लाभ ले सकें। युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित जो प्राणवान स्वयंसेवक युगऋषि की लाल मशाल को थामे हुए हैं, मिशन के विस्तार में और रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने में संलग्न हैं, उनके जीवन में भी हर पल बसंत दस्तक देता रहा है। अपने सत्संकल्प के अनुरूप शक्ति मिलने की और आशातीत सफलताओं की कथा-गाथा हम परस्पर सुनाते रहते हैं।

हर सृजनशील अंतःकरण में वासंती हिलोरें उठती हैं। जो जागरूक होते हैं, जिनके जीवन में सत्प्रेरणाओं का प्रकाश होता है, वे उन्हें पहचानकर उसका लाभ लेने में समर्थ हो जाते हैं और अपना जीवन धन्य बना लेते हैं। जैसे बसंत ऋतु में संचरित होने वाले रसों को ग्रहण कर पेड़ों में कोपलें फूटती हैं, कोयलें कूकने लगती हैं, बगियाँ खिल उठती हैं, वैसे ही यह बसंत जीवन में नई संभावनाओं के द्वार खोल देता है। तब समर्थ रामदास विवाह के बन्धन में बंधना अस्वीकार कर मानवता को निहाल करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। शेष तो रोजमर्रा के कामों में उलझकर ही सुख-दुःख के हिलोरों में झूलते हुए समय गँवाते रहते हैं।

यह युग बसंत की बेला भी है। शान्तिकुञ्ज की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष भगवान के साथ साझेदारी के सौभाग्य का वरण करने का विशेष संदेश लेकर आया है। इन दिनों सर्वत्र नवयुग के अरुणोदय का वासंती उल्लास छाया है। मानवता एक नई सोच के साथ नए भविष्य की ओर अग्रसर हो रही है। महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी की सूक्ष्म चेतना योगेश्वर श्रीकृष्ण की तरह युग के कर्मयोगी अर्जुनों को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने और असुरता पर विजय प्राप्त करने के लिए झकझोर रही है। ईश चेतना से, दैवी योजना से जुड़ने की सार्थकता इसीमें है कि इन दिनों उमड़ रहे वासंती प्रवाह को हम पहचानें, उसका वरण करें।

गुरुदेव की चेतना से जुड़ें

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी की सूक्ष्म चेतना से जुड़ने का सीधा-सा अर्थ है उत्कृष्टता की ओर अग्रगमन। इसके लिए केवल पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड ही पर्याप्त नहीं है। संतों की कृपा और आशीर्वाद तो उनके स्वभाववश सहज भी मिल जाया करते हैं, लेकिन उनके शक्ति-अनुदान के सच्चे हकदार वे होते हैं जो उनके विचार, उनके संकल्प, उनके अभियान के साथ जुड़े होते हैं। ईश्वर समदर्शी है, लेकिन भक्तों को उनके अनुदान पात्रता और आवश्यकता के अनुरूप ही मिलते हैं।

विद्युत के उदाहरण से ही देखें। ट्रांस्फॉर्मर में विद्युत सबके लिए उपलब्ध है। लेकिन उससे जुड़ने वाले उपकरणों को उनकी पात्रता के अनुरूप ही विद्युत प्राप्त होती है। कल-कारखानों की बड़ी मोटरों को अधिक विद्युत मिलती है और घरेलू पंखों की मोटरों को कम। एक ही बिजली का उपयोग कर हीटर गरमी देते हैं और कूलर ठंडक। जितनी ज्यादा बिजली चाहिए, उतने ही मजबूत तारों से उन्हें ट्रांस्फॉर्मर से जोड़ने की आवश्यकता होती है। हल्के तार उस दाब को सहन नहीं कर पाते, जल जाते हैं और दुर्घटना का कारण बनते हैं।

यह आत्मविश्लेषण की वेला है। हम देखें कि क्या हमें परम पूज्य गुरुदेव जैसी महान अवतारी चेतना से जुड़ने का गौरव बोध हो पा रहा है? क्या हमारे हृदय में निकृष्टता को त्यागकर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने का साहस विकसित हो रहा है? हम ईश्वरीय प्रेरणाओं और अंतःकरण में उठती हिलोरों के अनुरूप जीवन जी पा रहे हैं? युगऋषि के दिव्य शक्ति प्रवाह को कितना ग्रहण कर पा रहे हैं? अपनी दीन से देवता और नर से नारायण बनने की संभावनाओं को कितना साकार कर पा रहे हैं?

संभावनाएँ अनन्त हैं, बस जीवन साधना बढ़ाने की आवश्यकता है। क्या करें? कैसे करें? इस प्रश्न का सीधा-सा उत्तर है, हम अपने गुरुदेव की तरह बनने का प्रयास करें। गुरुदेव कहते थे कि शेर का बच्चा शेर जैसा साहसी और हाथी का बच्चा हाथी जैसा बलशाली होता है। हम भी अपने गुरुदेव के जीवन पथ का अनुसरण करते चलें तो निःसंदेह हमारी सामर्थ्य और सक्रियता बढ़ती जाएगी।

व्यावहारिक साधनाओं का संकेत

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी को हम सच्चे ब्राह्मण, युगऋषि, उच्च कोटि के संत, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ के रूप में जानते हैं। वे औघड़ दानी, परम कृपालु रहे। कुशल संगठक, उत्तम समाज सुधारक जैसी न जाने कितनी विशेषताएँ उनमें थीं। विष्णु सहस्त्रनाम की तरह हजारों गुण-विशेषणों के साथ उन्हें जाना जा सकता है। उनके किसी भी गुण के प्रति गहन आस्था रखकर शिष्यगण अपने व्यक्तित्व को बुलंदियों तक पहुँचा सकते हैं।

यह शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। निःसंदेह उनसे जुड़े परिजन अपने गुरुदेव के जीवन आदर्शों को अपनाकर ही समाज के समक्ष उत्कृष्टता का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं। लेकिन इस दिशा में एक और कदम बढ़ा कर युग निर्माण आन्दोलन के विशेष पर्व 'स्वर्ण जयन्ती वर्ष' को अविस्मरणीय बनाया जा सकता है। आज के व्यावहारिक जीवन में कठिनाइयाँ हैं, लेकिन अपने गुरुदेव के आश्वासन और आशीर्वाद के सहारे कुछ भी न किया जा सके, ऐसा हो नहीं सकता।

विचार कीजिए :-

- गुरुदेव-माताजी सच्चे ब्राह्मण थे। अत्यंत सीमित साधनों में उनका जीवन बीता। हम अपने सुख-साधनों में कुछ कटौती करते हुए ब्राह्मणोचित जीवन की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। सीमित कपड़ों का प्रयोग, सामान्य श्रेणी में यात्राएँ, ए.सी. जैसी सुविधाओं का न्यूनतम उपयोग, समय की नियमितता जैसे अनेक व्रत कम से कम एक वर्ष के लिए लिए जा सकते हैं।
- गुरुदेव ने आजीवन सादा भोजन लिया। हम एक वर्ष के लिए थाली में सादा और सीमित संख्या में व्यंजन लेने का व्रत ले सकते हैं।
- रिश्वत-भ्रष्टाचार त्यागने का व्रत लिया जा सकता है। विवशता की स्थिति में कम से कम अपने हिस्से का परित्याग तो किया ही जा सकता है या उसे सत्कार्यों में लगाने का संकल्प लिया जा सकता है।
- पूज्य गुरुदेव ने अनवरत लेखन किया, हम एक घण्टा नियमित स्वाध्याय का संकल्प ले सकते हैं।
- हम वेदमूर्ति के वेददूत बनकर अपने लिए निश्चित संख्या में गाँव, घर चुनकर वहाँ तक युगऋषि के सद्ज्ञान का प्रकाश पहुँचाते रहने का व्रत निभा सकते हैं।

संभावनाएँ अनन्त हैं। यज्ञ में अणुव्रत देव-दक्षिणा दिलाने की हमारी परम्परा है। इस दिशा में हम कुछ और आगे बढ़ सके तो स्वर्ण जयन्ती वर्ष में आया यह बसंत पर्व हमारे लिए ऐतिहासिक और अविस्मरणीय हो जाएगा। आवश्यकता साहस और संकल्पपूर्वक बढ़ने की है, हमारी समर्थ गुरुसत्ता संकल्पों को अधूरा नहीं रहने देती।

विशेष ज्ञातव्य

इस वर्ष 'देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ' शृंखला पूरे देश में 1 जनवरी 2022 के पहले से ही आरंभ हो गई थी। प्रज्ञा अभियान के गत (16 जनवरी 2022) अंक में पृष्ठ 2 पर इसकी सूचना और आवश्यक मार्गदर्शन भी दिया गया था। लेकिन इसी बीच कोरोना की तीसरी लहर प्रारंभ हो गई, जो कि बहुत तेजी से फैल रही है। इसे देखते हुए नित नए शासकीय दिशा-निर्देश जारी हो रहे हैं। कई राज्यों में नाईट कर्फ्यू, धारा 144, वीकेंड कर्फ्यू आदि लागू हैं। ऐसी परिस्थितियों में देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञों का हो पाना संभव नहीं था।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्था तंत्र द्वारा शासकीय निर्देशों का पालन करते हुए और एक जिम्मेदार संगठन के रूप में कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए पूरी सावधानी बरतते हुए लगभग 5 जनवरी को ही सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए गए थे और शान्तिकुञ्ज से प्रस्थान कर चुकी टोलियों को वापस बुला लिया गया था। चूँकि तब तक 16 जनवरी 2022 का प्रज्ञा अभियान छप चुका था, अतः नई सूचना प्रकाशित नहीं हो सकी।

अभिनव सूचनाएँ

1. सभी कार्यक्रम स्थगित रहेंगे

- यह समाचार लिखे जाने (19 जनवरी 2022) तक अभिनव सूचना यह है कि शान्तिकुञ्ज की टोलियों द्वारा संचालित समस्त कार्यक्रम अगली सूचना तक स्थगित रहेंगे।
- क्षेत्रीय स्तर पर जो कार्यक्रम चलाए जाएँ, उनमें शासकीय दिशा-निर्देशों का पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए और कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए सभी आवश्यक सावधानियाँ रखी जानी चाहिए।

2. सभी शिविर स्थगित रहेंगे

शान्तिकुञ्ज में चलने वाले समस्त शिविरों को अगली सूचना तक के लिए स्थगित कर दिया गया है।

3. केवल संस्कार के लिए आएँ, आरटीपीसीआर नेगेटिव रिपोर्ट साथ लाएँ

शान्तिकुञ्ज में शिविरार्थी एवं दर्शनार्थियों का प्रवेश रोक दिया गया है। जो तर्पण जैसे आवश्यक संस्कार कराने आना चाहते हैं, वे अपने साथ 72 घंटे के भीतर की आरटीपीसीआर नेगेटिव रिपोर्ट साथ लेकर आएँ, तभी संस्कार के लिए अनुमति दी जाएगी।

- **आज्ञा से, व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार**

पीड़ितों की सेवा और पिछड़ों के उत्थान के लिए किए गए प्रयास

शीत से बचाव के लिए गरीब परिवारों में कम्बल एवं वस्त्र वितरण

पचमढ़ी, होशंगाबाद। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार पिपरिया द्वारा प्रत्येक वर्ष दिसम्बर माह में आदिवासी क्षेत्र में जरूरतमंदों को ऊनी कपड़े वितरित किए जाते हैं। इस वर्ष भी यह सेवाकार्य जारी रखते हुए पिपरिया शाखा ने पचमढ़ी के ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों तक जाकर उन्हें कम्बल, स्वेटर आदि प्रदान किये, साहित्य-स्टिकर भी बाँटे गए।

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

हनुमत सेवा समिति, लखनऊ ने 7 जनवरी को गर्म कपड़ों के वितरण का बृहद अभियान चलाया। समिति के अध्यक्ष श्री विवेक पाण्डेय के नेतृत्व में गर्म कपड़े, कम्बल, रजाई आदि एकत्र कर सीतापुर रोड स्थित छठा मील और बीकेटी क्षेत्र में जरूरतमंदों तक पहुँचाए गए।

अकोट, अकोला। महाराष्ट्र

सर्दी के मौसम में गरीबों की सहायता करते हुए विचार क्रांति युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार अकोला ने अकोट तहसील के ग्राम पुंडा में सौ से ज्यादा आदिवासी परिवारों में कंबल वितरित किये। इस अवसर पर गाँव के नंदी महादेव मंदिर में गाँव के युवा एवं प्रतिष्ठित नागरिकों की गोष्ठी भी रखी गई थी। उन्हें गायत्री परिवार के रचनात्मक कार्यों से अवगत कराया गया। नंदी महादेव मंदिर के अध्यक्ष श्री दादा साहेब खोटरे, प्रतिभा साहित्य संघ के संस्थापक अध्यक्ष, ज्येष्ठ कवि श्री विठ्ठल कुलट आदि गणमान्यों को युगसाहित्य भेंट करते हुए गायत्री परिवार ने समाज कल्याण के कार्यों में सहयोग के लिए प्रेरित किया गया। गाँव में युवा मंडल की स्थापना की गई। विचार क्रांति युवा प्रकोष्ठ अकोला के साथ उमरा एवं पुंडा शाखाओं के युवा कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर इस सेवाकार्य को सम्पन्न कराया।

पचमढ़ी की गरीब बस्तियों में जाकर कम्बल बाँट रहे परिजन

अकोला जिले के पुण्डा गाँव में चल रहा कम्बल वितरण कार्य

मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए काढ़ा वितरण

बाराँ। राजस्थान

'दिया' बाराँ और स्थानीय आयुर्वेद विभाग के सहयोग से 8 एवं 9 जनवरी 2022 को नगर के प्रताप चौक पर सर्दी, खाँसी, जुकाम जैसी मौसमी बीमारियों एवं कोरोना से बचाव के लिए लोगों को निःशुल्क काढ़ा पिलाया गया। गायत्री परिवार की इन सेवाओं से लगभग दो हजार लोग लाभान्वित हुए। भूपेंद्र सांखला, शुभम मालव व शशांक नन्दवाना आदि युवा संगठन 'दिया' के लगभग 15 सदस्यों ने

कोरोना सम्बन्धी समस्त दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए लोकमंगल के इस कार्य में पूरी रुचि एवं सेवाभाव से सहयोग किया।

टाटानगर के 47वें रक्तदान शिविर में 156 युनिट रक्तदान हुआ

पूर्व मुख्यमंत्री सहित अनेक गणमान्यों ने युवाओं का उत्साहवर्धन किया

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री परिवार टाटानगर द्वारा चलाई जा रही रक्तदान शिविर शृंखला के अन्तर्गत 47वाँ रक्तदान शिविर जमशेदपुर ब्लड बैंक के सहयोग से स्वर्गीय मुन्ना प्रसाद एवं फुलझड़ी देवी की पुण्य स्मृति में शीतला भवन, भालुबासा में आयोजित हुआ। इसमें 156 यूनिट रक्त संग्रह हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रज्ञा महिला मंडल की बहिनों द्वारा यज्ञ कर वैश्विक महामारी कोरोना से सुरक्षा के लिए प्रार्थना और सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना के साथ हुआ। इस अवसर पर भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास, श्री दिनेश कुमार पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा, राष्ट्रीय तीरंदाज सुश्री पूर्णिमा महतो जैसी गणमान्य हस्तियों ने उपस्थित रहकर गायत्री परिवार के सेवा कार्यों को प्रोत्साहित किया। रक्तदान शिविर का संयोजन नवयुगदल के श्री संजीव सिन्हा ने किया।

माननीय श्री रघुवर दास एवं अन्य गणमान्यों की उपस्थिति में चल रहा रक्तदान शिविर

निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण शिविर

• **नारी स्वावलम्बन**

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार अलवर ने 1 जनवरी 2022 से शहर के जनता कॉलोनी विस्तार, मुंगस्का में निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण शिविर आरम्भ किया। 20 बहिनें इस शिविर का लाभ ले रही हैं। शिविर का शुभारंभ पूजन-प्रार्थना के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री प्रदीप कुमार शर्मा एवं श्री चरण सिंह चौधरी ने बहिनों को स्वावलम्बी बनाने के लक्ष्य का उल्लेख करते हुए प्रशिक्षु बहिनों से पूरी निष्ठा के साथ गायत्री परिवार की सेवाओं का लाभ लेने का आह्वान किया।

यह शिविर प्रशिक्षिका श्रीमती मीरा शर्मा के घर पर ही चलाया जा रहा है। इससे पूर्व गायत्री शक्तिपीठ, करौली कुण्ड, अलवर पर भी 16 दिसम्बर 2021 से सिलाई प्रशिक्षण शिविर चल रहा है। दोनों शिविर तीन माह तक चलेंगे।

पर्वतीय अंचल में स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण

• **कुटीर उद्योग**

उत्तरकाशी। उत्तराखण्ड

गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री अजय प्रकाश बडोला ने उत्तरकाशी में स्वावलम्बन, स्वरोजगार हेतु निःशुल्क प्रशिक्षण का क्रम आरम्भ किया है। वे ग्रामवासियों को गाय के गोबर से धूपबत्ती, दीपक, सूक्ष्मयज्ञ के लिए कण्डे, राखी, पेपर वेट जैसे अनेक सामान बनाने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। वे बताते हैं कि उनके प्रयास काफी लोकप्रिय सिद्ध हो रहे हैं, अनेक गाँव के लोगों ने इसका प्रशिक्षण लिया है। अब 'अजय गायत्री कुटीर उद्योग' की स्थापना कर इसे और लोकप्रिय बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

जिला कारागार में 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन

बंदियों को कोरोनावायरस से बचाने के लिए किए गए प्रयास

सीहोर। मध्य प्रदेश

वातावरण शोधन के लक्ष्य के साथ गायत्री परिवार की स्थानीय शाखा ने जिला कारागार सीहोर में नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। श्री मनोहर दांगी ने बताया कि इस कार्यक्रम में बंदियों को कोरोनावायरस के बढ़ते संक्रमण से बचने के उपाय बताये गए। साथ ही गायत्री जप व मंत्रलेखन से अपने मन और विचारों को शुद्ध कर जीवन को बेहतर बनाने की और नशा छोड़ने की प्रेरणाएँ भी दी गईं एवं संकल्प कराए गए। पुरोहितों ने अन्य कारागारों में बंदियों को गायत्री उपासना से मिले लाभ की चर्चा की। सर्वश्री ओमप्रकाश, बने सिंह दांगी, द्वारका वर्मा, भोपाल से श्रीमती कांता गुप्ता, मनावर से श्रीमती विनीता प्रशांत खंडेलवाल, इंदौर से प्रेम लाल कुशवाहा बुधनी ने आयोजन की सफलता में विशिष्ट योगदान दिया।

देवपूजन करते एवं बंदियों के संग यज्ञ करते कारागार के वरिष्ठ अधिकारीगण

पुण्यतिथि पर कन्यापूजन व बुजुर्गों का सम्मान

• **सत्प्रवृत्ति संवर्धन**

कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान

अपने क्षेत्र में श्रद्धा, सक्रियता, समर्पण का आदर्श प्रस्तुत कर रहे श्री श्याम सुंदर शर्मा के सुपुत्र श्री शिव शंकर शर्मा, निवासी धनवाडा, तहसील कुम्हेर ने अपने दादाजी एवं दादीजी की पुण्यतिथि पर कन्या पूजन एवं वृध्दजन सम्मान समारोह आयोजित किया। गायत्री प्रज्ञा पीठ बावेन पर आयोजित इस समारोह में रा.उ.मा. विद्यालय बावेन की 51 कन्याओं का पूजन कर उन्हें गर्म जर्सी प्रदान कीं। इसके अलावा गाँव के पाँच वृध्दजनों

का सम्मान कर उन्हें पाँच-पाँच वस्त्र उपहार रूप में दिये। श्री श्याम सुंदर शर्मा के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रेरणादायी समारोह में जिला संगठन एवं स्थानीय अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

छिंदवाड़ा जिले का 180वाँ सतत साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

जिला संयुक्त समन्वय समिति, गायत्री शक्तिपीठ, मधुवन कॉलोनी, छिंदवाड़ा द्वारा संचालित साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान का 180वाँ वृक्षारोपण कार्यक्रम नगर के मध्य स्थित छोटा तालाब के टापू पर सम्पन्न हुआ। श्री अरुण पराड़कर ने इस अवसर पर वृक्षारोपण का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि वृक्ष हमारे प्राण रक्षक हैं। हम उनकी सुरक्षा करेंगे तो वे हमारे प्राणों की सुरक्षा करेंगे। आज के बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए हम सभी को वृक्षारोपण के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

इस कार्यक्रम में प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री राजेश साहू, रेंजर एन. एस. ठाकुर सहित गायत्री परिवार के युवाओं की बड़ी टोली ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर श्री विनोद माहोर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

तालाब के किनारे वृक्षारोपण कार्यक्रम

74 बहिनों ने कराया पुंसवन संस्कार

जबलपुर। मध्य प्रदेश

26 दिसंबर को नगर की सुप्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. श्रीमती शारदा मिश्रा की गरिमामयी उपस्थिति में गायत्री शक्तिपीठ, मनमोहन नगर पर 74 गर्भवती महिलाओं का पुंसवन संस्कार हुआ। डॉ. शारदा ने इस अवसर पर स्वस्थ एवं संस्कारवान संतान प्राप्त करने की शुभकामनाएँ देते हुए गर्भवती बहिनों को अपने आहार-विहार पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. श्रीमती अमिता सक्सेना ने गर्भ संस्कार के वैज्ञानिक पक्ष को रखते हुए बताया कि कैसे बहिनें अपने शिशु को मनचाहे संस्कार और विचारों में ढाल सकती हैं। श्रीमती कविता तिवारी की टोली द्वारा संस्कार संपन्न कराया गया, कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव ने एवं आभार प्रदर्शन उपजोन समन्वयक श्री नरेश तिवारी ने किया।

ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए तीन काम पर्याप्त हैं-नदी जैसी उदारता, सूरज जैसी गतिशीलता और पृथ्वी जैसी सहनशीलता।

प्रशिक्षण व श्रद्धा संवर्धनपरक कार्यक्रम

वाराणसी में उपजोन स्तरीय तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

वाराणसी। उत्तर प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ, नगवां, वाराणसी में नये वर्ष के स्वागत के साथ ही 1 से 3 जनवरी की तारीखों में उपजोन स्तरीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर कोरोना सुरक्षा नियमों के पालन के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें वाराणसी, मिर्जापुर, चंदौली, संत रविदास नगर, जौनपुर एवं सोनभद्र जिले से 100 से अधिक प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। शिविर के तीन दिनों में श्री राम नारायण त्रिपाठी, श्री सुरेश चन्द्र यादव, श्री बृजेश कुमार मिश्रा, जोन प्रभारी श्री प्रसेन सिंह व श्री अशोक मिश्रा ने कर्मकाण्ड, अनुशासन, प्रज्ञागीत-ढपली वादन, प्रशिक्षण का उद्देश्य आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया। साथ ही वर्ष 2025 तक गृहे गृहे गायत्री एवं यज्ञ कार्यक्रम को सफलता पूर्वक संपन्न करने हेतु प्रेरित किया।

श्री सुरेश चन्द्र यादव ने कहा कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण पूर्ण हो जाने पर प्रशिक्षित साधकों को ब्लाकों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में युग निर्माण योजना के क्रियान्वयन एवं जनजागरण हेतु भेजा जायेगा। जिला समन्वयक श्री गंगाधर उपाध्याय ने भी साधकों का अभिनंदन करते हुए उन्हें रचनात्मक कार्यों में समय देने हेतु कहा।

वाराणसी में चल रहा कार्यकर्त्ता प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

डॉ. विन्ध्याचल सिंह जी ने ऐसा प्रशिक्षण सभी जिलों में आयोजित होने पर बल दिया।

समयबद्ध लक्ष्य प्राप्ति हेतु कार्ययोजना बनी

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बारापत्थर में 26 दिसम्बर को छिन्दवाड़ा उपजोन के जुड़े चारों जिलों में संगठन से जुड़े परिजनों की एक अंतरंग गोष्ठी हुई। इसमें चारों जिलों-बैतूल, बालाघाट, सिवनी और छिंदवाड़ा के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी, जिला संयोजक और उनके सहयोगी संयोजकों ने भाग लिया।

उपजोन समन्वयक श्री दीपचंद मालवीय द्वारा करीब 20 बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए गुरुकार्यों को गति देने का आह्वान किया गया। अभियानों की समयबद्ध लक्ष्य प्राप्ति के लिए सर्व सम्मत निर्णय लिए गए। कार्य वर्ष 2022 का कैलेंडर ब्लॉक स्तरीय, जिला स्तरीय एवं उप जोन स्तरीय घोषित किया गया। समिति के वरिष्ठ परिजन

परिव्राजकों के लिए प्रशिक्षण

गोष्ठी में उप जोन स्तर पर चारों जिलों-बैतूल, बालाघाट, सिवनी और छिंदवाड़ा के सभी 109 प्रज्ञा संस्थानों के परिजनों के लाभार्थ एक दिवसीय परिव्राजक प्रशिक्षण का भी निर्णय लिया गया।

के रूप में श्री महेश खजान्ची का प्रेरक प्रबोधन हुआ।

सार्वजनिक गायत्री महायज्ञों से जनमानस में नवचेतना जगाई

वाराणसी में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का संचालन करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

दिनांक 8 जनवरी को बनारस इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एजुकेशन कॉलेज, बाबतपुर वाराणसी में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं भजनोपदेशक युवा मोटिवेशनल संगोष्ठी सम्पन्न हुई। कलश यात्रा के साथ निकली सद्ग्रंथ शोभायात्रा इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा। इसमें आयोजक संस्थान के अलावा कई और शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया।

पंडित गंगाधर उपाध्याय के अनुसार गायत्री शक्तिपीठ, दानुपुर वाराणसी के संयोजन में आयोजित यह कार्यक्रम युवा उत्थान एवं नारी सम्मान की प्रेरणाओं से ओतप्रोत था। युवा प्रकोष्ठ वाराणसी के श्री अनिलेश तिवारी ने शोभायात्रा को सम्बोधित करते हुए सद्ग्रंथों की महत्ता बताई। उन्होंने कहा कि सद्ग्रंथ जीवन के तमस को हटाकर नशा, कुरीति, अशिक्षा, कुविचारों से मुक्ति दिलाते हैं।

कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से आई श्री सुखदेव शर्मा की टोली ने सम्पन्न कराया। उन्होंने नारी सम्मान तथा माँ भारती की सुरक्षा का संकल्प लेकर अपने कर्तव्यों को भी पूरा करने की प्रेरणाएँ प्रदान कीं।

गुना। मध्य प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार गुना के मार्गदर्शन में योगेश्वर महिला मण्डल द्वारा योगेश्वर महादेव मंदिर योगी मोहल्ला पुरानी छावनी पर तीन दिवसीय पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ और प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया। प्रथम दिन कलश यात्रा के साथ निकाली गई सद्ग्रंथों की शोभायात्रा ने नगरवासियों को बहुत आकर्षित किया। जहाँ बहिनों ने मस्तक पर कलश धारण किए थे, वहीं भाइयों ने युगऋषि द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण ग्रंथों को धारण कर युग साहित्य के प्रति आस्था दर्शायी। यज्ञ में विभिन्न संस्कारों की तरह सद्ग्रंथ स्थापना का भी क्रम रहा, अनेक लोगों ने विधि-विधान से स्थापना कराई।

गुना की गलियों से गुजरती कलश यात्रा

इटारसी। मध्य प्रदेश

ग्राम जुझारपुर में शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष की कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत दिनांक 26 से 28 दिसम्बर 2021 की तिथियों में 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न हुआ। इसमें लगभग 500 श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दीक्षा संस्कार भी हुए।

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

युवा प्रकोष्ठ ईसानगर एवं गायत्री शक्तिपीठ नानपारा के 'गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना' के संयुक्त अभियान के अन्तर्गत ग्राम ओझापुरवा में 32 घरों में एक साथ एक ही दिन गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराए गए। इसके अलावा पतरासी में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें पूरे गाँव के लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। लखीमपुर जिले के मीडिया प्रभारी के अनुसार श्रावस्ती में आगामी नवम्बर माह में आयोजित हो रहे **'प्रान्तीय युवा युग सृजेता'** को ध्यान में रखते हुए ये कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

वर्ष 2022 के स्वागत समारोह

गुरु पदचिह्न यात्रा एवं ग्राम प्रदक्षिणा वाहन रैली

सुप्त युवा शक्ति को दिया नवजागरण संदेश

कोटा। राजस्थान

दिया, कोटा ने वर्ष 2022 का शुभारम्भ 1 एवं 2 जनवरी को कई गाँवों में ग्राम प्रदक्षिणा वाहन रैली निकाल कर किया। 'दिया' से जुड़े युवा और वरिष्ठ परिजनों का 60 सदस्यीय दल इस अभियान के अन्तर्गत उन गाँवों में पहुँचा, जहाँ कभी गुरुवर के चरण कमल पड़े थे और वे इन दिनों सुप्त हो गए हैं। विचार क्रान्ति साहित्य वितरण, नशामुक्ति संदेश, गीत, संगोष्ठी, दीवार लेखन जैसे कार्यक्रमों से अपने क्षेत्र में युगऋषि के पदार्पण का गौरव बोध करने और सक्रियता बढ़ाने की प्रेरणाएँ दीं।

ग्राम प्रदक्षिणा रैली पहले दिन श्रीराम शर्मा स्मृति उपवन कोटा से आरंभ होकर मंडाना गाँव, दरा, कनवास, हिंगोनिया, सांगोद पहुँची। सांगोद में रात्रि विश्राम एवं संगोष्ठी के बाद अगले दिन आवां एवं

इस यात्रा का हर जगह भव्य स्वागत हुआ। अग्रणी युवाओं का स्वागत करते हुए सक्रियता के संकल्प कराए गए।

कैथून में कार्यक्रम किए। दिया आशीष शर्मा एवं डॉ. अभिनव सोनी ने अपने गीत एवं संदेश से उत्कृष्टता की ओर अग्रगमन का उत्साह जगाया। कनवास के मुक्तिधाम में वृक्षारोपण किया।

कार्यक्रम का संचालन दिया कोटा के समीर नैनीवाल, वैभव गौतम ने किया। श्रीमती कविता विजय, श्रीमती रेखा पटवा की सक्रियता ने नारी जागरण अभियान को बल दिया। गायत्री शक्तिपीठ कोटा के वरिष्ठ जन सर्वश्री जी.डी. पटेल, चुतुर्भुज जोशी, रामकिशन सुमन, वी.के. सिंह, हेमराज पांचाल भी पूरी यात्रा में साथ रहे।

वृद्धजनों के संग मनाया नया साल

पण्डरा, भुबनेश्वर। ओडिशा

गायत्री प्रज्ञा पीठ पण्डरा के कार्यकत्ताओं ने नववर्ष 2022 का उत्सव वृद्धाश्रमों में रह रहे वृद्धजनों के संग मनाया। वे दो वृद्धाश्रमों में गए, दोनों में साफ-सफाई करने के बाद गायत्री मंत्र की सामूहिक उपासना की। बुजुर्गों को हल्का योगाभ्यास कराते हुए अपनी दिनचर्या में योग को स्थान देने की प्रेरणा दी। सभी को मेवे, स्वल्पाहार, एवं वस्त्रादि प्रदान किए। प्रज्ञापीठ के श्री प्रदीप जेने, हृदयानन्द, गन्धर्व साहू, बिसवारंजन, श्रीमती मंजुला पाढ़ी, प्रभाती, लक्ष्मी एवं रश्मि बहन ने बुजुर्गों की सेवा कर अपनी सद्भावनाओं का शानदार परिचय दिया।

यज्ञ एवं प्रज्ञा सम्मेलन में सत्संकल्प लिए

गुढ़ागौडजी, झुंझुनुं। राजस्थान

उदयपुरवाटी शाखा के सौजन्य से कस्बा गुढ़ागौडजी में नववर्ष के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ एवं एक दिवसीय प्रज्ञा सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रतिभागी श्रद्धालुओं को सच्चाई और अच्छाई के मार्ग पर चलते हुए स्वयं बेहतर जीवन जीने तथा समाज को श्रेष्ठ बनाने में योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया। सभी ने सबके लिये सदबुद्धि एवं सबके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना

नए वर्ष का स्वागत यज्ञाहुतियों के संग

के साथ यज्ञ भगवान को अपनी आहुतियाँ समर्पित कीं।

शिक्षक-विद्यार्थियों में सत्संकल्प जगाए

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री प्रज्ञापीठ एवं मां भगवती प्राथमिक विद्यालय बाबूखेड़ा रायबरेली रोड लखनऊ में नववर्ष के उपलक्ष्य में बच्चों एवं शिक्षकों को जप, ध्यान, यज्ञ कराया एवं विचार गोष्ठी आयोजित हुई। जिसमें बच्चों को संस्कार के विषय में विस्तार से समझाया गया। बच्चों को संस्कार की दीक्षा दी गई एवं अन्य उपहार वितरित किए गये। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए गायत्री प्रज्ञापीठ के परिजनों ने एवं विद्यालय स्टाफ ने खूब सहकार दिया।

'हरित मोडासा' के उद्घोष के साथ वृक्षारोपण

मोडासा। गुजरात

मोडासा शखा ने नववर्ष के उपलक्ष्य में 'प्राणवान रविवार' मनाते हुए 'हरित मोडासा' का संकल्प लिया। इस निमित्त मालरोड स्थित गायत्री संस्कार धाम में शान्तिकुञ्ज से लाए तरु प्रसाद का रोपण नगरपालिका प्रमुख जलपा बेन भावसार ने किया। उल्लेखनीय है कि मोडासा गायत्री परिवार द्वारा विगत 27 रविवार में नगर में

वृक्षारोपण करती नगर पालिका अध्यक्ष

286 पेड़ लगाए जा चुके हैं।

भाग्य के सम्बन्ध में निश्चित बात एक ही है कि वह मनुष्य के प्रयासों के अनुरूप बदलता रहता है।

शक्तिपीठ पर लगाया त्रैमासिक पुस्तक मेला

लोगों के आकर्षण को देखते हुए स्थायी प्रदर्शनी में बदलने के हो रहे हैं प्रयास

भोपाल। मध्य प्रदेश : परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि विचार क्रांति ही गायत्री परिवार का मूल आधार है। ज्ञानयज्ञ इस युग का सबसे बड़ा परमार्थ है। विश्व के प्रत्येक नागरिक को इसमें सम्मिलित होने के लिये विवश किया जाएगा।

गुरुवर के इन विचारों से प्रेरित होकर गायत्री शक्तिपीठ भोपाल ने शक्तिपीठ पर ही पुस्तक मेला लगाया है। डॉ. अशोक नेमा बताते हैं कि स्थानीय परिजनों को इस कार्य की प्रेरणा सद्ग्रंथ स्थापना अभियान के आरम्भ होने से मिली। आरंभ में वे पुस्तक मेले को शारदीय नवरात्र तक रखना चाहते थे, लेकिन इसकी शानदार सफलता को देखते हुए इसे तीन माह के लिए बढ़ा दिया और अब इसे स्थायी प्रदर्शनी का रूप देने का मन बनाया जा रहा है।

सद्ग्रंथ स्थापना अभियान की घोषणा के दिन 19 सितम्बर 2021 से पुस्तक मेले का शुभारम्भ हुआ। शक्तिपीठ, भोपाल के वरिष्ठ जन श्री ओ.पी. तिवारी, डॉ. अशोक नेमा, श्री के.के. मिश्रा, श्री सी.पी. सराठे, श्री अम्बाराम गोठी, श्री मोहित मिश्रा आदि ने सर्वप्रथम देवपूजन एवं सद्ग्रंथ पूजन किया।

देवदर्शन से पहले सद्विचारों के संग साक्षात्कार

यह पुस्तक मेला गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य प्रवेश द्वार एवं गौशाला के सामने लगाया गया है। मंदिर आने वाले दर्शनार्थी इस क्षेत्र से होकर ही मंदिर पहुँचते हैं। साहित्य के रोचक शीर्षक देख, उनसे प्रभावित होकर वे साहित्य भी खरीदते हैं। इससे निःसंदेह समाज में सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार बढ़ा है।

हर दिन साहित्य से परिचय होने के कारण बहुत से लोग तो बच्चों को सत्साहित्य पढ़ने की प्रेरणा देने या मनचाहा साहित्य प्राप्त करने के लिए ही शक्तिपीठ आने लगे हैं। इसकी सफलता को देखते हुए अब इसे स्थाई प्रदर्शनी का रूप दिए जाने पर विचार चल रहा है।

भोपाल के पुस्तक मेले में पहुँचे डॉ. चिन्मय जी

युग सैनिकों का मूल कार्य

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि का इस पुस्तक मेले में दो बार आना हुआ। उन्होंने सद्साहित्य को अपने मस्तक पर रखकर परिक्रमा लगाई और कहा-यह युग सैनिकों का मूल कार्य है।

अटल एकता केन्द्रीय पुस्तकालय, झाँसी में वाङ्मय स्थापना

झाँसी। उत्तर प्रदेश

दिनाँक 07 जनवरी 2022 को अटल एकता केन्द्रीय लायब्रेरी, झाँसी में युगऋषि पंडित श्री राम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण वाङ्मय की स्थापना वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ की गई। इस अवसर पर प्रज्ञापीठ प्रेमनगर झाँसी के प्रबन्ध ट्रस्टी श्री राजेंद्र द्विवेदी ने पूज्य गुरुदेव के साहित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज समाज में दुर्भावनाओं, दुष्प्रवत्तियों ने ही शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संकटों को खड़ा किया है। इनका मूल कारण है मनुष्य के विचारों में आई विकृति। यदि इस दुर्मतिजन्य दुर्गति का समाधान चाहते हैं तो श्रेष्ठ विचारों को जन-जन तक पहुँचाना होगा। श्री द्विवेदी ने पूज्य गुरुदेव का कथन दोहराते हुए कहा कि अगली क्रांति लहू और लोहे से नहीं, अपितु विचारों से विचारों की काट से ही होगी।

> अगली क्रान्ति लहू और लोहे से नहीं, सद्विचारों से दुर्विचारों की काट से होगी।
> - परम पूज्य गुरुदेव

इस प्रतिष्ठित पुस्तकालय में श्री आदित्य श्रीवास्तव एवं सहयोगियों द्वारा वाङ्मय की स्थापना की गई। इससे हजारों युवा लाभान्वित होंगे। अटल एकता ई-लायब्रेरी का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 19 नवम्बर 2021 को वीरांगना महारानी लक्ष्मी बाई के पावन जन्म दिवस पर किया था। इस अवसर पर श्री सूर्या कुशवाहा, श्रीमती किरण श्रीवास्तव, सुश्री राजेश्वरी कुशवाहा, श्री संजीव खरे, श्री प्रभात शर्मा उपस्थित रहे।

अटल एकता केन्द्रीय पुस्तकालय में वाङ्मय स्थापना कर रहे गायत्री परिवार झाँसी के परिजन

कल्याण कॉलेज और दीया छत्तीसगढ़ के बीच एम.ओ.यू.

व्यक्तित्व परिष्कार एवं स्वउद्यमिता विकास के लिए दिया द्वारा महाविद्यालय में विविध कार्यक्रम चलाए जाएँगे

डॉ. चंद्रोल और डॉ. साव सहमति ज्ञापन का आदान-प्रदान करते हुए

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

'दिया' छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित युवा उत्कर्ष कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के सबसे प्रतिष्ठित और प्राचीनतम महाविद्यालय कल्याण पी.जी. कॉलेज भिलाई के वनस्पति विभाग और अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा शाखा दिव्य भारत युवा संघ छत्तीसगढ़ के बीच एम.ओ.यू. (सहमति ज्ञापन) हुआ। इसके अन्तर्गत महाविद्यालय में 'दिया' द्वारा व्यक्तित्व परिष्कार एवं स्वउद्यमिता विकास सम्बन्धी निःशुल्क कार्यक्रम चलाए जाएँगे। वनस्पति विभाग के अध्यक्ष डॉ. जी.के. चंद्रोल एवं 'दिया' छत्तीसगढ़ संयोजक डॉ. पी.एल. साव द्वारा एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना है।

अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन

25 पाठकों ने सुनाई आत्मसुधार की अनुभूतियाँ

सिवनी। मध्य प्रदेश

5 दिसम्बर को सिवनी में आयोजित जिला स्तरीय अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन में 300 पाठकों ने भाग लिया था। मुख्य वक्ता शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ.अशोक ढोके थे, जिन्होंने अखण्ड ज्योति पत्रिका की विशेषताओं और प्रभाव की चर्चा की। उन्होंने कहा कि अखण्ड ज्योति युगऋषि के तप और प्राणों की संवाहक पाती है, जो जीवन की हर प्रकार की समस्याओं के समाधान सुझाती है।

सम्मेलन में पधारे पाठकों में से 25 पाठकों ने अखण्ड ज्योति पत्रिका के माध्यम से उनके जीवन में आए सकारात्मक बदलाव एवं अनुभूतियों की जानकारी दी। उन्हें सुनकर श्रोताओं की आस्था और प्रगाढ़ हो गई। सम्मेलन में नए सदस्य और नए पाठक तैयार करने के संकल्प उभरे।

महिलाओं के धार्मिक अधिकारों पर राष्ट्रीय सेमीनार

राँची शाखा द्वारा नारी-गौरव की प्रभावशाली प्रस्तुति

राँची। झारखण्ड

नेशनल यूनिवर्सिटी कांके, रांची परिसर में मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित हुआ। सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एण्ड सबअल्टर्न स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडी एण्ड रिसर्च इन लॉ, कांके, रांची, झारखण्ड हाईकोर्ट लीगल सर्विसेज कमेटी एवं यू.जी.सी. वीमेन्स स्टडीज सेंटर पटना यूनिवर्सिटी, पटना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सेमीनार का विषय था-महिलाओं के धार्मिक अधिकार एवं 21 वीं सदी में महिलाओं के मानव अधिकार। भारत के कई लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों ने इसमें भाग लिया। गायत्री परिवार को इसमें परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया गया था।

गायत्री शक्तिपीठ सेक्टर-2 धुर्वा के व्यवस्थापक जी ने गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व करते हुए गुरुदेव के विचारों को काफी प्रभावी ढंग से रखा। उन्होंने कहा कि ब्रह्मा सृजनकर्त्ता हैं तो सरस्वती भी सृजन की देवी हैं। विष्णु की तरह ही लक्ष्मी जी पालन एवं संवर्द्धन करती हैं। महेश संतुलन कर्त्ता हैं तो उन्हीं की तरह काली असुरता की संहारक है। माता सीता के द्वारा यज्ञ कर्म करने एवं यज्ञोपवीत धारण करने के वाल्मीकि रामायण के उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल में जो अधिकार पुरुषों को थे, वही महिलाओं को भी मिले थे। तब महिलाओं को गायत्री एवं यज्ञ का अधिकार प्राप्त था।

युग निर्माण योजना के नारी जागरण आन्दोलन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव ने 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' का उद्घोष किया है, जो आज चरितार्थ होता दिखाई दे रहा है। पूज्य गुरुदेव ने नारी के धार्मिक अधिकारों की पुनः प्रतिष्ठा करते हुए करोड़ों बहिनों को यज्ञोपवीत धारण कराया है, उन्हें यज्ञ-संस्कार करने और गायत्री जपने का अधिकार दिलाया है।

मुख्य न्यायाधीश महोदय ने समाज में प्रचलित भ्रान्तियों की चर्चा की, जिनका समाधान गायत्री परिवार के प्रतिनिधि ने किया। उन्होंने कहा कि स्वर्ग, मोक्ष एवं मुक्ति की प्राप्ति पुत्र या पुत्री के पिण्डदान से नहीं, अपने कर्मों के फल से होती है।

गायत्री परिवार ने सभी गणमान्यों को मंत्र चादर देकर सम्मानित किया। उपस्थित सभी गणमान्यों एवं 100 बच्चों को भी युग साहित्य निःशुल्क दिये गये। सभी ने कार्यक्रम की सराहना की।

देसंविवि की छात्रा के कौशल को सराहा

देवास। मध्य प्रदेश

अपने परिवीक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत देवास पहुँची कुमारी शीतल ढालसे ने गायत्री शक्तिपीठ के समीप केरला पब्लिक स्कूल एवं हिमालय एकेडमी में बच्चों को योग सिखाया। इस अवसर पर विद्यार्थियों की तन्मयता दर्शनीय थी। शीतल ने अपने विवि. की गतिविधियों की जानकारी भी दी।

कुमारी शीतल की प्रभावशाली प्रस्तुति को दोनों विद्यालयों में खूब सराहा गया और इसके लिए प्रमाण पत्र भी दिए गए। इस अवसर पर शक्तिपीठ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता भी साथ रहे।

ऊपर शीतल ढालसे की उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए विद्यालय प्रबन्धन की ओर से दिया जा रहा प्रमाणपत्र

दिवंगत दिव्यात्माओं को श्रद्धांजलि

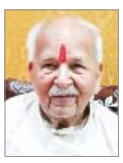

डॉ. राम विशाल तिवारी, लखनऊ। उत्तर प्रदेश

तिवारी का पुरा (पछियाना), खपराडीह, अयोध्या के मूल निवासी, अपने क्षेत्र में गरीबों की सेवा के लिए जाने माने पूर्व जिला होमियोपैथिक चिकित्साधिकारी डॉ. राम विशाल तिवारी दिनांक 4 जनवरी 2022 को 80 वर्ष की आयु में अपने आराध्य की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। वे परम पूज्य गुरुदेव के जीवनादर्शों के प्रति समर्पित रहे। छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाँति, दहेज, रात्रि विवाह, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं का जीवन भर विरोध करते रहे। अखण्ड ज्योति वितरण एवं गायत्री मंत्र लेखन कार्य वे नियमित रूप से करते रहे। पुत्र डॉ. अनिल, एड. पवन एवं डॉ. समीर तथा पुत्रियाँ रीतू व नीतू भी अपने पिता के दिए संस्कार और विचारों के अनुरूप मिशन की सेवा कर रहे हैं।

श्री बद्रीलाल नाहर, महीदपुर, उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार ट्रस्ट महीदपुर मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री बद्रीलाल नाहर का देवलोक गमन हो गया है। वे मिशन में प्रारंभिक दिनों में जुड़ गए थे। शाजापुर जिले में गुरुदेव की यात्राओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप शिक्षक थे, महीदपुर में स्थानांतरण हुआ, तब से पूरे क्षेत्र में भ्रमण कर मिशन का विस्तार करते रहे। स्व. बद्रीलाल जी के प्रयासों से इन दिनों महीदपुर में शक्तिपीठ पर निर्माण कार्य चल रहा है।

श्रीमती फुलेश्वरी ध्रुव, गरियाबन्द। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ गरियाबंद की सेवादानी बहिन श्रीमती फुलेश्वरी देवी ध्रुव, निवासी ग्राम झिथरीडूमर का 26 दिसम्बर 2021 को निधन हो गया। उन्होंने लगभग 10 वर्ष शान्तिकुञ्ज में रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं।

छत्तीसगढ़ में नई उमंग और नए उत्साह के साथ हुआ नए वर्ष का शुभारंभ

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के चार दिवसीय (2 से 5 जनवरी) प्रवास में अनेक प्रतिष्ठित कार्यक्रम आयोजित हुए

गायत्री शक्तिपीठ रायपुर पर आयोजित स्वागत समारोह को सम्बोधित करते डॉ. चिन्मय जी

प्रकाश पैदा करो, अँधेरा स्वयं छँट जाएगा

गायत्री शक्तिपीठ रायपुर में आयोजित स्वागत समारोह में सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोध कराया

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के छत्तीसगढ़ प्रवास का शुभारम्भ 2 जनवरी को रायपुर से हुआ। हवाई अड्डे पर भव्य स्वागतोपरांत गायत्री शक्तिपीठ रायपुर में प्रथम स्वागत समारोह सम्पन्न हुआ। इसमें गायत्री परिवार के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं के अलावा रायपुर सांसद श्री सुनील सोनी, दुर्ग सांसद श्री विजय बघेल, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल, एम. आई.सी. मेम्बर नागभूषण राव, गुरुद्वारा प्रबंधन के वरिष्ठ सदस्य श्री शैलानी जी आदि गणमान्य उपस्थित थे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने आज की सामाजिक परिस्थितियों का बड़ा मार्मिक विश्लेषण करते हुए बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि अंधेरे से लड़ने की जरूरत नहीं है, बल्कि वहाँ पर प्रकाश पैदा करने की जरूरत है, जहाँ अँधेरा है। बटोरना सिखाएँगे तो बच्चे स्वार्थी बनेंगे और

- सांसद, विधायक सहित समाज के अनेक अग्रणी गणमान्यों ने स्वागत किया।
- सदग्रंथ स्थापना में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा विभाग द्वारा 12 परिजनों को सम्मानित किया गया।

बाँटना सिखायेंगे तो समाज में प्यार बढ़ेगा। यदि बच्चों के मन में ही अपने सहपाठियों के साथ अपनी ज्ञान संपदा को बाँटने की प्रवृत्ति पैदा करें तो वही बच्चा भविष्य में सामाजिक सोच के साथ आगे बढ़ेगा।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि समाज की सोच ही राम और रावण बनाती है। जिस व्यक्ति में स्वार्थ, अहंकार, लोभ, मोह है वह रावण है, और जिसने इन बुराइयों पर विजय प्राप्त कर ली है, वह राम है। अनेक उदाहरणों के माध्यम से उन्होंने बताया कि सकारात्मक सोच और दृढ़ संकल्प के साथ बढ़ा जाए तो एक अकेला व्यक्ति भी समाज में बड़ी क्रान्ति कर सकता है।

दिया छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित जिला स्तरीय युवा सम्मेलन

'युवा उत्कर्ष दुर्ग' में युवाओं की सक्रियता की सराहना की

4 जनवरी को डॉ. चिन्मय जी ने दुर्ग में 'दिया' छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित जिला स्तरीय युवा उत्कर्ष कार्यक्रम को सम्बोधित किया। उन्होंने 'दिया' के गठन के उद्देश्य समझाते हुए उस दिशा में प्रान्तीय युवा संगठन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले समाजसेवियों को शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के 2 जनवरी से 5 जनवरी 2022 तक के पूरे छत्तीसगढ़ प्रवास में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर, श्री रामअवतार पाटीदार, श्री गोपाल शर्मा एवं श्री त्रिलोक तारक के साथ छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्री दिलीप पाणीग्रही तथा प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री ओमप्रकाश राठौर साथ रहे।

'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान ने रचा स्वर्णिम इतिहास

माननीय मुख्यमंत्री जी गवाह बने, 525 बहिनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार हुआ

संस्कार परम्परा हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा वैज्ञानिक आधार पर विकसित परम्परा है। गर्भ में जिस प्रकार की आत्मा का आह्वान किया जाता है और माता-पिता उसके अनुरूप आचरण करते हैं, उसी प्रकार की संतान का जन्म होता है। वर्तमान वैज्ञानिक भी इससे सहमत हैं।

सिलघट में आयोजित जिला स्तरीय सामूहिक पुंसवन संस्कार समारोह को सम्बोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अनेक प्रमाणों के साथ उक्त विचार व्यक्त किए। समारोह में सैकड़ों की संख्या में पुंसवन संस्कार करा रही बहिनों को युगतीर्थ के आशीष एवं उत्तम संतति की प्राप्ति के लिए अपनी ओर से शुभकामनाएँ भी दीं।

यह सामूहिक पुंसवन संस्कार महोत्सव माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री जी ने गायत्री परिवार द्वारा संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित करने और गर्भ संस्कार महोत्सव को आंदोलन का स्वरूप देने के लिए गायत्री परिवार की सराहना की।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपने तीस मिनट के उद्बोधन में गायत्री परिवार एवं पूज्य गुरुदेव द्वारा किए गए समाजसुधार के कार्यक्रमों का ही वर्णन किया। उन्होंने एक व्यक्ति द्वारा किए गए असंभव-से कार्यों का उल्लेख करते हुए पूज्य गुरुदेव को शत-शत नमन किया।

श्री दुर्गा प्रसाद टिकरिहा, श्री खोमराज साहू, श्रीमती छाया वर्मा सांसद राज्यसभा, श्रीमती अनिला भेड़िया मंत्री महिला एवं बाल विकास की मुख्य भूमिका रही। टोली के रूप में श्रीमती सरला कोसरिया, श्रीमती रूपाली गाँधी, रोमा साहू, चेतना चौहान एवं श्रीमती मीनाक्षी विश्वास की टोली ने संस्कार सम्पन्न कराया। समारोह में गृह मंत्री माननीय श्री ताम्रध्वज साहू, सहकारिता मंत्री श्री रविन्द्र चौबे, अनेक जनप्रतिनिधि एवं लगभग तीन हजार की संख्या में परिजन उपस्थित रहे।

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज

सिलघट के सामूहिक पुंसवन संस्कार महोत्सव में 525 पंजीकृत गर्भवती बहनों का पुंसवन संस्कार कराया गया। इतनी बड़ी संख्या में एक साथ बहिनों के पुंसवन संस्कार पहली बार हो रहे थे, जिसे गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया। इसके लिए गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड पुरस्कार समिति के पदाधिकारी ने माननीय मुख्यमंत्री जी की उपस्थिति में आदरणीय डॉ.चिन्मय पण्डया जी को सम्मान पत्र प्रदान किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को प्रमाणपत्र प्रदान करते गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के अधिकारी

राज्यपाल से विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए उत्साहवर्धक समर्थन मिला

2 जनवरी की शाम को आदरणीय डॉक्टर चिन्मय जी की प्रदेश की राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके से उनके निवास पर सौजन्य भेंट हुई। उन्हें गायत्री परिवार की गतिविधियों से अवगत कराया गया। 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान से वे विशेष रूप से प्रभावित थीं। उन्होंने इसे छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में शामिल करने हेतु आवश्यक निर्देश देने की बात कही।

सुश्री उईके को देसंविवि का प्रतीक चिह्न भेंट करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

स्वच्छता पर संदेश

नगर निगम के सभाकक्ष में कलेक्टर, महापौर सहित समस्त पार्षदों की विशेष सभा में आंतरिक शुचिता की अनिवार्यता समझाई

नगर निगम रायपुर के व्हाईट हाउस में 3 जनवरी को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, विषय था 'स्वच्छता पर संदेश'। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने वर्तमान में देश में चलाए जा रहे स्वच्छता जागरूकता अभियान का हृदय से स्वागत किया, साथ ही इस अभियान को समग्रता एवं सार्थकता प्रदान करने के सूत्र भी बताए। उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी से लेकर पूज्य गुरुदेव ने स्थूल जगत की स्वच्छता के साथ-साथ सूक्ष्म जगत की शुद्धि एवं आंतरिक पवित्रता पर जोर दिया है। वातावरण की स्वच्छता एवं हृदय की पवित्रता हो, तभी ईश्वर का सामीप्य प्राप्त होता है। बाह्य जगत की स्वच्छता भी आंतरिक शुचिता पर निर्भर है।

कार्यक्रम में जिला कलेक्टर श्री सौरभ कुमार, महापौर श्री एजाज ढेबर, सभापति श्री प्रमोद दुबे, निगम के आयुक्त श्री प्रभात मलिक, नेता प्रतिपक्ष श्री मीनल चौबे, एम. आई.सी. मेम्बर श्री नागभूषण राव सहित रायपुर निगम के सभी पार्षदगण उपस्थित थे।

रायपुर नगर निगम ने देशव्यापी स्वच्छता अभियान में छठवाँ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया है। इस उपलब्धि के लिए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने गायत्री परिवार की ओर से सभी सहयोगियों को बधाई दी।

दो प्राचीन ऐतिहासिक देवालयों के दर्शन किए

चंदखुरी में माता कौशल्या मंदिर के दर्शन

माता कौशल्या मंदिर के दर्शन

3 जनवरी को रायपुर से 25 कि.मी.दूर दक्षिण कौसल स्थित ग्राम चंद्रखुरी में भगवान श्री रामचंद्र जी की माता कौशल्या की जन्मभूमि में स्थित ऐतिहासिक कौशल्या मंदिर के दर्शन किए।

प्राचीन हनुमान मंदिर के दर्शन

निकुम से बालोद के रास्ते में कमरौद गाँव में हनुमान जी का अत्यंत प्राचीन भव्य मंदिर है। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने उसके दर्शन किए और वहाँ तीर्थ चेतना के जागरण का संदेश दिया।

ईश्वर अपनी पूजा कराने से खुश नहीं होता, उसे तो वह प्यारा है, जो उसके पुत्रों से प्रेम करता है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का छत्तीसगढ़ प्रवास (2 से 5 जनवरी 2022)

समर्पण की शुभ परिणति और श्रद्धा का सम्मान

नैष्ठिक कार्यकर्त्ता ने अपनी जन्मभूमि में कराई प्रज्ञापीठ की स्थापना

मुरा में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय जी

गायत्री शक्तिपीठ रायपुर के व्यवस्थापक श्री सदाशिव हथमल ने अपने गृहग्राम मुरा में गायत्री प्रज्ञापीठ का निर्माण कराया है। 3 जनवरी को मुरा पहुँचकर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा की। उन्होंने पीठ की व्यवस्था के लिए दो एकड़ निजी भूमि दान भी की है।

श्रद्धा का सम्मान : इस कार्यक्रम में डॉ. चिन्मय जी ने मिशन के लिए तन-मन-धन से समर्पित श्री सदाशिव हथमल जी को सम्मानित भी किया।

श्रद्धा का महत्त्व : डॉ. चिन्मय जी ने एक दृष्टांत के माध्यम से श्रद्धा का महत्त्व बताया। उन्होंने बताया कि सन् 1951 में सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिड़ला के सुपुत्र श्री वसंत बिड़ला ने करोड़ों की लागत से भव्य गायत्री तपोभूमि के निर्माण का प्रस्ताव पू.गुरुदेव के समक्ष रखा था, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव ने उसे यह कहकर स्वीकार नहीं किया कि वे जन-जन की श्रद्धा का संचय कर लोगों के हृदय में गायत्री माता को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं।

कर्वधा में 51 कुण्डीय यज्ञ के साथ नए भवन का लोकार्पण

गायत्री शक्तिपीठ कवर्धा में नवनिर्मित तीन मंजिला भवन के लोकार्पण का कार्यक्रम 51 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। नवनिर्मित भवन में प्रशिक्षण की व्यवस्था बनाई जा रही है।

डॉ. चिन्मय जी ने भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर दिए संदेश में उन्होंने श्रद्धालुओं को अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जो परस्पर सहकार एवं उदारता के साथ निष्कपट भाव से सेवा के मार्ग पर चलता है, उसका जीवन यज्ञमय हो जाता है। यज्ञ आहुतियाँ देते समय हमें यही भाव करना चाहिए।

कवर्धा में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

पावन तीर्थ बनेगा मोतीगाँव (ओडिशा) - डॉ. चिन्मय जी

छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती क्षेत्र ओडिशा के नवरंगपुर जिले के मोतीगाँव में नवनिर्मित प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा एवं 51 कुण्डीय यज्ञ का कार्यक्रम था। दूर-दूर से सैकड़ों कार्यकर्त्ता वहाँ पहुँचे थे। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के आगमन से सभी बहुत उत्साहित हुए।

मोतीगाँव में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत और उनके द्वारा शिलापट्ट का पूजन

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए आशा व्यक्त की कि जिस तन्मयता और तत्परता से यहाँ के कार्यकर्त्ता प्रज्ञापीठ के निर्माण में जुटे रहे, उसी उत्साह के साथ मिशन को जन-जन में प्रतिष्ठित करेंगे। उड़ीसा का यह पावन क्षेत्र माँ गायत्री की स्थापना के साथ ही प्राणवान तीर्थ के रूप में अपनी एक नई पहचान बनाने में सक्षम होगा।

पूर्व सांसद एवं समर्पित कार्यकर्त्ता श्री चंदूलाल साहू जी के घर सौजन्य भेंट

राजिम : श्री चंदूलाल साहू जी दो बार लोकसभा सदस्य रह चुके हैं। वे गायत्री शक्तिपीठ राजिम के वरिष्ठ सदस्य भी हैं, अनेक बार शान्तिकुञ्ज आते रहे हैं। डॉ. चिन्मय जी उनके घर पहुँचे, परिवार के सभी सदस्यों से भेंट करते हुए युगतीर्थ की शुभकामनाएँ प्रदान कीं। डॉ. चिन्मय जी के सहज, सरल स्वभाव एवं व्यक्तित्व ने उन सभी को बहुत प्रभावित किया।

श्री चंदूलाल साहू के घर डॉ. चिन्मय जी का उत्साहभरा स्वागत

इन्दागाँव : शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता, छत्तीसगढ़ जोन प्रभारी श्री शुकदेव निर्मलकर की माता जी का हाल ही में स्वर्गवास हो गया था। उनके घर पहुँचे, श्रद्धांजलि दी।

मैनपुर में प्रज्ञापीठ निमार्णाधीन है। डॉ.चिन्मय जी ने वहाँ गर्भगृह के स्थान पर पूजन किया।

गरियाबंद में गायत्री शक्तिपीठ में उपस्थित सैकड़ों परिजनों को संबोधित किया। उन्हें गायत्री शक्तिपीठ के उद्देश्य एवं परिजनों की जिम्मेदारी का अहसास कराया।

कोपरा : गायत्री प्रज्ञापीठ कोपरा में भी दर्शन, भेंट के साथ संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। कार्यकर्त्ताओं के सघन समूहों को गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचने की प्रेरणा दी।

अनेक प्रज्ञा केन्द्रों की प्राण प्रतिष्ठा एवं विस्तार

डोटोपार (बालोद) बना देवतापुर

8000 श्रद्धालुओं ने महोत्सव में भाग लिया

बालोद जिले के छोटे-से गाँव डोटोपार में आयोजित 24 कुण्डीय यज्ञ एवं प्राण प्रतिष्ठा के जिला स्तरीय कार्यक्रम ने सभी को बहुत प्रभावित किया। लगभग दो घंटे की प्रतीक्षा के बाद भी वहाँ उपस्थित अत्यंत अनुशासित एवं व्यवस्थित हजारों परिजनों का विहंगम दृश्य देखते ही बनता था। डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें 'देवता' की उपमा दी। उन्होंने कहा कि जो अपनी प्रतिभा, धन, समय का कुछ अंश समाज के हित में नियोजित करता है, सच्चे अर्थों में वही देवता है। शान्तिकुञ्ज के स्वर्णजयंती वर्ष के अवसर पर ऐसे देवताओं को तलाशा जा रहा है। मुझे विश्वास है कि छत्तीसगढ़ प्रांत इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभायेगा।

डॉ. चिन्मय जी ने स्थानीय परिजनों की श्रद्धा-निष्ठा को नमन करते हुए गुरुसत्ता से प्रार्थना की कि यह क्षेत्र निरंतर आध्यात्मिक प्रगति करता रहे। उन्होंने कहा कि इस गाँव का नाम डोटोपार नहीं, देवतापुर होना चाहिए।

डोटोपार के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग ले रही जनमेदिनी

विशिष्ट झलकियाँ

- केन्द्रीय प्रतिनिधियों के स्वागत में पुष्पवर्षा के लिए 200 मीटर तक की लोगों की लम्बी कतार सड़क के किनारे पंक्तिबद्ध थी।
- 24 कुण्डीय यज्ञ हुआ, जिसकी यज्ञशाला के निर्माण एवं व्यवस्था में बहिनों ने अथक परिश्रम किया।
- हजारों परिजनों की उपस्थिति में प्राण प्रतिष्ठा का क्रम सम्पन्न हुआ।
- स्थायी यज्ञशाला एवं श्रीराम स्मृति उपवन का शिलान्यास भी किया गया।
- मुख्य कार्यकर्त्ता श्री सम्पत लाल साहू के पूर्वज स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिसकी याद में शिलालेख का अनावरण करते हुए ध्वजारोहण किया गया।

अनेक प्रज्ञा संस्थानों की सक्रियता एवं प्रगति का अवलोकन

कार्यकर्त्ताओं को लक्ष्य बोध कराया, सक्रियता की दिशा दी

गायत्री प्रज्ञापीठ कांडेकेला, गरियाबंद में 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' का हुआ अनावरण

छत्तीसगढ़ में गरियाबंद जिले के गायत्री प्रज्ञापीठ कांडेकेला में गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' की स्थापना हुई। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने उसका अनावरण किया। सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने गुरुधाम का संदेश हृदयंगम करते हुए भावी सक्रियता के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया।

बेमेतरा में हुआ आत्मीयतापूर्ण स्वागत

केन्द्रीय प्रतिनिधियों के गायत्री शक्तिपीठ बेमेतरा पहुँचने पर भावभीना स्वागत हुआ। वहाँ संक्षिप्त संदेश एवं आत्मीयतापूर्वक भेंट का कार्यक्रम था।

छुरिया वासियों के सौभाग्य की सराहना

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि 4 जनवरी को अत्यंत मनोरम स्थान पर निर्मित प्रज्ञापीठ छुरिया के दर्शन के लिए पहुँचे। दर्शनोपरांत उन्होंने स्थानीय परिजनों से कहा -

''जिसकी प्राण प्रतिष्ठा स्वयं महाकाल के हाथों हुई हो वह पत्थर की मूर्ति नहीं, बल्कि सद्बुद्धि देने वाली प्राणवान माता है। मेरा सौभाग्य है कि पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राण प्रतिष्ठित माता का दर्शन-लाभ मुझे मिला। आप सब भी इस सौभाग्य का वरण करते हुए समाजहित में कुछ कर सकें, तभी पूज्य गुरूदेव का यहाँ तक आना सार्थक होगा।''

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव के निर्माणाधीन पाँच मंजिला भवन का अवलोकन

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव में पाँच मंजिला भव्य भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। कुल 20 हजार वर्ग फीट के इस निर्माण कार्य का अवलोकन कर परिजनों के प्रयासों की सराहना की।

शक्तिपीठ पहुँचने पर शिक्षक-विद्यार्थियों सहित गायत्री परिवार के परिजनों ने भव्य स्वागत किया। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री नंदकिशोर सुरजन, मुख्य प्रबन्ध ट्रस्टी श्री सूर्यकांत चितलांग्या एवं गायत्री विद्यापीठ की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर स्वागतकर्त्ताओं में प्रमुख थे। डॉ. चिन्मय जी ने शिक्षक-विद्यार्थियों को आशीर्वचन दिए, बाल संस्कारशाला का उद्घाटन किया।

निर्माण कार्य की जानकारी देते श्री सूर्यकान्त एवं श्री सुरजन

गायत्री प्रज्ञापीठ निकुम की पुर्नस्थापना

दुर्ग जिले के गायत्री प्रज्ञापीठ निकुम की सन् 1981 में परम पूज्य गुरुदेव ने स्वयं प्राण प्रतिष्ठा की थी। आज उसी की पुर्नस्थापना हो रही है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्डया जी 4 जनवरी को वहाँ पहुँचे, जिससे वहाँ के लोग पुनः एक बार उमंग एवं उत्साह से भर उठे। 24 कुण्डीय यज्ञशाला के मंच से उद्बोधन देते हुए केन्द्रीय प्रतिनिधि ने सद्बुद्धि का प्रकाश स्वयं के एवं औरों के जीवन में फैलाने का आह्वान किया।

'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' का अनावरण

4 जनवरी को गायत्री शक्तिपीठ बालोद में नवनिर्मित भव्य गुरुस्मारक 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' का अनावरण शान्तिकुञ्ज प्रतिनधि द्वारा किया गया। तत्पश्चात् गुरुकुल विद्यामंदिर में आयोजित सभा को उन्होंने सम्बोधित किया। डॉ. चिन्मय जी ने पूज्य गुरुदेव की आकांक्षा की याद दिलाई, कहा कि पूज्य गुरुदेव चाहते थे कि प्रत्येक कार्यकर्त्ता चलती-फिरती शक्तिपीठ बने, जो स्वयं इतना उत्कृष्ट हो कि औरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके। उन्होंने बिना किसी संशय के एवं बिना समय गँवाये गुरुकार्य में तन-मन-धन से जुट जाने का आह्वान सभी से किया। इस अवसर पर विभिन्न समाजों के प्रतिनिधि सहित लगभग 500 परिजन उपस्थित थे।

जिसका ईश्वर के सिवा और कोई अवलम्बन नहीं, वह जानता ही नहीं कि संसार में पराभव भी कोई चीज है।

युवा चेतना दिवस के रूप में मनाई गई स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती

राष्ट्र चेतना के नवजागरण के लिए आगे आएँ युवा।

– श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी को देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं शान्तिकुञ्ज परिवार ने करोड़ों युवाओं के आदर्श स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणाओं को बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ हृदयंगम किया। हजारों युवा युग सृजेताओं ने अपने मार्गदर्शक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के मुखारविंद से पर्व संदेश सुना।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि स्वामी जी सदैव सकारात्मकता और साहस के साथ राष्ट्र-संस्कृति के उत्थान के लिए आगे आने की प्रेरणाएँ देते रहे। वे जो कहते थे, उसे पूरी श्रद्धा व पारदर्शिता के साथ अपनाते रहे, इसीलिए राष्ट्र-चेतना के नवजागरण का अविस्मरणीय कार्य कर पाए। श्रद्धेय डॉ. साहब ने आजादी के अमृत महोत्सव के बीच मनाये जा रहे युवा दिवस के अवसर पर श्रोताओं को लोभ, मोह, अहंकार के बंधनों से आजादी के लिए स्वामी जी के किसी एक जीवन आदर्श को अपनाने की प्रेरणा दी।

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने ऑनलाइन संदेश देकर लाखों युवाओं का पथ प्रदर्शन किया।

यह कार्यक्रम कोरोना संक्रमण काल की सावधानियों को ध्यान में रखते हुए वर्चुअल ही मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं युवा जागरण गीत के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री केदार प्रसाद दुबे ने किया।

राष्ट्रनिष्ठ युवाओं के सच्चे पथ प्रदर्शक हैं स्वामी जी

आज ऐसे प्रतिभावान व कर्मठ युवाओं की जरूरत है, जो निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र के विकास के लिए कार्य कर सकें। स्वामी विवेकानन्द जी का व्यक्तित्व एवं उनके विचार ऐसे युवाओं के सच्चे पथ प्रदर्शक हैं।

– डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि.

विवेकानन्द जयन्ती पर पूरे देश में उत्साहवर्धक आयोजन हुए

मशाल यात्राएँ

गुजरात के अनेक नगरों में मशाल यात्रा, वाहन यात्रा एवं सभाओं के आयोजन हुए। दाहोद, ईडर, सूरत, पालनपुर आदि स्थानों में उत्साहवर्धक कार्यक्रम हुए। अन्य संगठनों ने साथ मिलकर सारे विश्व में हिन्दुत्व की पताका फहराने वाले युवा युग नायक स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को याद किया।

कोरोना वॉरियर्स का सम्मान

भोपाल (मध्य प्रदेश) की मशाल यात्रा नगर में आकर्षण का केन्द्र रही। इस यात्रा के बाद गायत्री शक्तिपीठ पर आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में कोरोना महामारी के समय सेवाएँ प्रदान करने वाले अनेक लोगों और संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

संकल्प यात्रा

युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश) द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस पर धौराहरा कस्बे में युग सृजेता संकल्प यात्रा निकाली गई। धौराहरा ब्लॉक के बबुरी गाँव में युवा ग्राम प्रदक्षिणा का आयोजन हुआ। 12 जनवरी को ही शक्तिपीठ में युग सृजेता जनपदीय कार्यालय का उद्घाटन किया गया।

दाहोद (गुजरात) की मशाल यात्रा, धौरहरा, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) की संकल्प यात्रा और केन्द्रापाड़ा (ओडिशा) की मशाल यात्रा में साहित्य वितरण

अस्पतालों में फल बाँटे

सुल्तानपुर (उ.प्र.) में युवा संगठन ने अस्पतालों में जाकर मरीजों को फल बाँटे और उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की।

बाल संस्कार शाला की भागीदारी

गुरुग्राम (हरियाणा) शाखा द्वारा ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें बाल संस्कार शाला के बाल मित्र एवं कुछ विद्यालयों के शिक्षक-विद्यार्थियों ने भाग लिया।

युवा चेतना दीपयज्ञ

जबलपुर (म.प्र.) में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ पर युवा चेतना दीपयज्ञ आयोजित किया गया। इसमें बाल संस्कार शाला के छात्रों ने अस्पृश्यता निवारण विषय पर एक नाटिका प्रस्तुति की।

साहित्य वितरण

ओडिशा में गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ के सदस्यों ने गजपति तथा केन्द्रापाड़ा में अनेक विद्यालय, महाविद्यालयों में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती मनाई। युवा मण्डल ने शिक्षक-विद्यार्थियों में साहित्य वितरित किया।

24 स्थानों पर दीपयज्ञ

जमशेदपुर (झारखण्ड) के विभिन्न युवा मण्डलों ने टाटानगर और इसके आसपास 24 अलग-अलग स्थानों पर दीपयज्ञ के सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुण निवेदन संगोष्ठी

टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश) जिले में युवा प्रकोष्ठ जतारा द्वारा सारगर्भित चर्चापरक कार्यक्रम रखा गया।

रक्तदान शिविर

गायत्री परिवार ट्रस्ट शिवपुरी (मध्य प्रदेश) द्वारा विवेकानंद जयंती पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 26 यूनिट रक्तदान हुआ।

दिया, जैसलमेर (राजस्थान) के युवाओं ने जवाहिर राजकीय चिकित्सालय में जाकर स्वैच्छिक रक्तदान किया।

ओडिशा के जाजपुर में मशाल शोभायात्रा एवं स्वच्छता कार्यक्रम के साथ रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 44 यूनिट रक्तदान हुआ।

पोस्टर प्रदर्शनी

गायत्री शक्तिपीठ नीमच (मध्य प्रदेश) पर प्रज्ञा विद्यालय में वरिष्ठ परिजनों की उपस्थिति में स्वामी विवेकानंद जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा स्वामी विवेकानंद के विचारों पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी लगाई गई।

राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में जैसलमेर (राजस्थान), शिवपुरी (मध्य प्रदेश) और जाजपुर (ओडिशा) में रक्तदान कर रहे युवा

आजादी के अमृत महोत्सव में गायत्री परिवार की गौरवपूर्ण भागीदारी

मकर संक्रान्ति के दिन पूरे विश्व में लाखों लोगों ने किया सूर्य नमस्कार

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत केन्द्रीय आयुष मंत्रालय के आह्वान पर मकर संक्रान्ति-14 जनवरी को वैश्विक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अखिल विश्व गायत्री परिवार के लाखों लोगों ने इसमें भाग लिया। शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित एवं देश-विदेश में सक्रिय हजारों परिजनों, योगाचार्यों ने अत्यंत प्रेरणाप्रद ढंग से सूर्य नमस्कार कराया। शान्तिकुञ्ज एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के योग प्रशिक्षकों ने अनेक कार्यक्रमों का वर्चुअल संचालन किया।

बीमारी के इस दौर में इम्युनिटी सिस्टम को मजबूत रखने के लिए नियमित रूप से योगाभ्यास, सूर्य नमस्कार और प्राणायाम करते रहना चाहिए। मकर संक्राति सूर्य के उत्तरायण होने का पर्व है। इस दिन सूर्य नमस्कार का सामूहिक आयोजन होना भारतवासियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का एक शुभ संकेत हैं।

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में

राजकोट शाखा ने पाकशाला के लिए मशीनें दीं

व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी मशीनों का उद्घाटन करते हुए

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में शान्तिकुञ्ज की सुन्दरता, सुव्यवस्था, सक्रियता को निखारने के प्रयास भी पूरे मनोयोग के साथ चलाए जा रहे हैं। इसी क्रम में गायत्री शक्तिपीठ, वैशाली नगर, राजकोट (गुजरात) ने अपनी विशिष्ट भावाञ्जलि अर्पित करते हुए रोटी बनाने एवं सब्जी तैयार करने की चार मशीन शान्तिकुञ्ज को भेंट की हैं। श्री भीखालाल सीदपरा के अनुसार इनकी कीमत 12 लाख रुपये है।

इन आधुनिक मशीनों का उपयोग शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के भोजनालय एवं कैण्टीन में किया जा रहा है। शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी ने मशीनों का विधिवत पूजन कर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर दानदाता शाखा राजकोट से आए वरिष्ठ प्रतिनिधि सर्वश्री मांडलभाई गोराणिया, भीखालाल सीदपरा, हितेष धाकाणी, दिलीप व्यास, किरीट अमृतिया, रंभा बेन ठुमर, जमनाबेन डोबरिया, अतुल जानी, कान्ती भाई पांभर, रमा बेन सीदपरा, दक्षा बेन मेहता, रीटा बेन व्यास, इन्दु बेन व्यास, हंसा बेन एवं शान्तिकुञ्ज के कई कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

शान्तिकुञ्ज के दो विद्यार्थियों का राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन

श्रद्धेया जीजी से आशीर्वाद लेते चि. रोहित एवं शाम्भवी

शान्तिकुञ्ज के दो विद्यार्थियों का 25वीं राष्ट्रीय युवा प्रतियोगिता हेतु चयन हुआ है। गायत्री विद्यापीठ में कक्षा ग्यारह के छात्र रोहित यादव एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में बीएससी (योग) की छात्रा शांभवी यादव इस प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। देहरादून में आयोजित राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर उनका चयन हुआ। इस अवसर पर योग कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल उत्तराखण्ड के निदेशक गिरधारी सिंह रावत एवं संयुक्त निदेशक राकेश चन्द्र डिमरी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय चैम्पियन रोहित

चि. रोहित यादव ने 24वें राष्ट्रीय युवा उत्सव में भी भाग लिया था और प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इसके लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित श्री खजान दास ने चि. रोहित को सम्मानित किया।

भाई-बहिन की जोड़ी

चि. रोहित व शांभवी दोनों भाई-बहिन हैं। वे अब तक सौ से अधिक योग प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग ले चुके हैं। वे कई राज्य एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण एवं रजत पदक जीत चुके हैं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.1.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23